परमेश्वर का नियम

Parmeshwar Ka Niyam

आज के ईसाई के लिए परमेश्वर का नियम

parmeshwarkaniyam.org

परिशिष्ट 7अ: कुंवारी, विधवा और तलाकशुदा स्त्रियाँ — वे विवाह जिन्हें परमेश्वर स्वीकार करता है

यह पृष्ठ परमेश्वर द्वारा स्वीकार की जाने वाली वैवाहिक संबंधों की श्रृंखला का हिस्सा है और इस क्रम का अनुसरण करता है:

1. [परिशिष्ट 7अ: कुंवारी, विधवा और तलाकशुदा स्त्रियाँ — वे विवाह जिन्हें परमेश्वर स्वीकार करता है](#) (वर्तमान पृष्ठ)।
2. [परिशिष्ट 7ब: तलाक का प्रमाणपत्र — सत्य और मिथक](#)
3. [परिशिष्ट 7स: मरकुस 10:11-12 और व्यभिचार में झूठी समानता](#)
4. [परिशिष्ट 7द: प्रश्न और उत्तर — कुंवारी, विधवा और तलाकशुदा स्त्रियाँ](#)

सृष्टि में विवाह की उत्पत्ति

यह सर्वविदित है कि पहला विवाह ठीक उसी समय हुआ जब सृष्टिकर्ता ने पहले मानव, एक पुरुष [אָדָם (ज़ाखार)] के लिए एक स्त्री [חַוְּוָה (नेकेवाह)] बनाई, जो उसकी संगिनी हो। “पुरुष” और “स्त्री” — यही वे शब्द हैं जिन्हें सृष्टिकर्ता ने स्वयं पशुओं और मनुष्यों दोनों के लिए प्रयोग किया ([उत्पत्ति 1:27](#))। उत्पत्ति के विवरण में कहा गया है कि यह पुरुष, जो परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया गया था, ने देखा कि पृथ्वी पर अन्य प्राणियों की कोई भी मादा उसके समान नहीं थी। कोई भी उसे आकर्षित नहीं करती थी, और वह एक साथी की इच्छा करता था। मूल भाषा में प्रयुक्त अभिव्यक्ति [אֵשֶׁת אָדָם (एज़ेर केनेग्दो)] का अर्थ है “एक उपयुक्त सहायक।” और यहोवा ने आदम की आवश्यकता को देखा और उसके लिए एक स्त्री बनाने का निर्णय किया, जो उसके शरीर का स्त्री रूप हो: “मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं है; मैं उसके लिए एक उपयुक्त सहायक बनाऊँगा” ([उत्पत्ति 2:18](#))। तब हव्वा को आदम के शरीर से बनाया गया।

बाइबल के अनुसार पहला संबंध

इस प्रकार आत्माओं का पहला संबंध हुआ: बिना किसी समारोह, बिना प्रतिज्ञाओं, बिना गवाहों, बिना भोज, बिना पंजीकरण और बिना किसी अधिकारी के। परमेश्वर ने बस स्त्री को पुरुष को दिया, और यह उसकी प्रतिक्रिया थी: “यह अब मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे मांस में से मांस है; इसका नाम ‘स्त्री’ होगा क्योंकि यह पुरुष से निकाली गई है” ([उत्पत्ति 2:23](#))। शीघ्र ही हम पढ़ते हैं कि आदम ने हव्वा के साथ संबंध बनाए [יָדָה (यादा) — जानना, यौन संबंध बनाना], और वह गर्भवती हो गई। यही अभिव्यक्ति (जानना), गर्भावस्था से जुड़ी हुई, बाद में कैन और उसकी पत्नी के संबंध में भी प्रयुक्त हुई ([उत्पत्ति 4:17](#))। बाइबल में वर्णित सभी संबंध बस एक पुरुष द्वारा एक कुंवारी (या विधवा) को अपने लिए

लेने और उसके साथ संबंध बनाने के हैं — लगभग हमेशा “जानना” या “उसके पास जाना” जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए — जो यह पुष्टि करता है कि वास्तव में संबंध हो गया। किसी भी बाइबिल विवरण में यह नहीं कहा गया है कि कोई धार्मिक या नागरिक समारोह हुआ हो।

परमेश्वर की दृष्टि में संबंध कब होता है?

मुख्य प्रश्न यह है: परमेश्वर कब मानते हैं कि विवाह हो गया है? तीन संभावित विकल्प हैं — एक बाइबिल का और सत्य, और दो असत्य तथा मानवीय आविष्कार।

1. बाइबिल का विकल्प

जब कुंवारी स्त्री अपने पहले पुरुष के साथ सहमति से संबंध बनाती है, उसी क्षण परमेश्वर उस पुरुष और स्त्री को विवाहित मानते हैं। यदि उसका पहले किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध रहा है, तो यह संबंध केवल तभी हो सकता है जब पूर्व पुरुष की मृत्यु हो चुकी हो।

2. असत्य सापेक्षतावादी विकल्प

परमेश्वर मानते हैं कि संबंध तब होता है जब युगल निर्णय लेते हैं। अर्थात्, पुरुष या स्त्री जितने चाहें उतने यौन साथी रख सकते हैं, लेकिन केवल जिस दिन वे निर्णय लेते हैं कि संबंध गंभीर हो गया है — शायद क्योंकि वे साथ रहने लगेंगे — उसी दिन परमेश्वर उन्हें एक देह मानते हैं। इस स्थिति में, यह प्राणी है, न कि सृष्टिकर्ता, जो यह तय करता है कि कब पुरुष की आत्मा स्त्री की आत्मा से जुड़ती है। इस दृष्टिकोण का बाइबल में तनिक भी आधार नहीं है।

3. सबसे सामान्य असत्य विकल्प

जब कोई समारोह होता है तभी परमेश्वर मानते हैं कि संबंध हुआ है। यह विकल्प दूसरे से बहुत अलग नहीं है, क्योंकि वास्तव में केवल इतना फर्क है कि प्रक्रिया में एक तीसरे मानव को जोड़ दिया गया है, जो शांति न्यायाधीश, पंजीकरण अधिकारी, पुरोहित, पादरी आदि हो सकता है। इस विकल्प में भी युगल के पहले कई यौन साथी हो सकते हैं, लेकिन केवल अब, किसी नेता के सामने खड़े होकर, परमेश्वर दोनों आत्माओं को एक मानते हैं।

विवाह भोजों में समारोह का अभाव

यह ध्यान देने योग्य है कि बाइबल चार विवाह भोजों का उल्लेख करती है, लेकिन किसी भी विवरण में संबंध को औपचारिक बनाने या आशीर्वाद देने के लिए किसी समारोह का उल्लेख नहीं है। यह शिक्षा नहीं दी गई है कि परमेश्वर के सामने संबंध को मान्य करने के लिए किसी रीति या बाहरी प्रक्रिया की आवश्यकता है ([उत्पत्ति 29:21-28](#); [न्यायियों 14:10-20](#); [एस्तेर 2:18](#); [यूहन्ना 2:1-11](#))। संबंध की पुष्टि तब होती है जब कुंवारी अपने पहले पुरुष के साथ सहमति से यौन संबंध बनाती है (पूर्णता)। यह विचार कि परमेश्वर केवल तब युगल को एक करते हैं जब वे किसी धार्मिक नेता या शांति न्यायाधीश के सामने खड़े होते हैं, पवित्रशास्त्र में कोई समर्थन नहीं पाता।

PDF: [बाइबल में सभी विवाहों की जानकारी वाला PDF डाउनलोड करें।](#)

व्यभिचार और परमेश्वर की व्यवस्था

आरंभ से ही परमेश्वर ने व्यभिचार को मना किया, जिसका अर्थ है कि स्त्री के एक से अधिक पुरुषों के साथ संबंध होना। इसका कारण यह है कि पृथ्वी पर एक समय में स्त्री की आत्मा केवल एक पुरुष से ही जुड़ सकती है। जीवन में स्त्री के कितने भी पुरुष हो सकते हैं, लेकिन प्रत्येक नया संबंध तभी हो सकता है जब पूर्व संबंध मृत्यु द्वारा समाप्त हो, क्योंकि तभी पुरुष की आत्मा परमेश्वर के पास लौटती है, जिससे वह आई थी ([सभोपदेशक 12:7](#))। अर्थात्, दूसरे पुरुष से जुड़ने के लिए उसे विधवा होना चाहिए। यह सत्य पवित्रशास्त्र में आसानी से सिद्ध होता है, जैसे कि जब राजा दाऊद ने अबीगैल के लिए केवल नाबाल की मृत्यु का समाचार सुनने के बाद ही दूत भेजे (1 शमूएल 25:39-40); जब बोअज़ ने रूत को पत्नी बनाया क्योंकि वह जानता था कि उसका पति, महलोन, मर चुका था ([रूत 4:13](#)); और जब यहूदा ने अपने दूसरे पुत्र ओनान को तामार से विवाह करने का आदेश दिया ताकि वह अपने मृत भाई के नाम से संतान उत्पन्न करे ([उत्पत्ति 38:8](#))। देखिए भी: [मती 5:32](#); [रोमियों 7:3](#)।

पुरुष और स्त्री: व्यभिचार में अंतर

पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि स्त्री के विरुद्ध व्यभिचार नहीं होता, बल्कि केवल पुरुष के विरुद्ध होता है। यह विचार, जो कई कलीसियाएँ सिखाती हैं — कि किसी स्त्री को छोड़कर दूसरी कुंवारी या विधवा से विवाह करने पर पुरुष अपनी पूर्व पत्नी के विरुद्ध व्यभिचार करता है — बाइबल में नहीं, बल्कि सामाजिक परंपराओं में पाया जाता है।

पढ़ें: [मरकुस 10:11-12](#) और व्यभिचार में झूठी समानता।

इसका प्रमाण प्रभु के कई सेवकों के उदाहरणों में मिलता है, जिन्होंने कुंवारियों और विधवाओं से कई विवाह किए, और परमेश्वर ने उन्हें नहीं डांटा — जिसमें याकूब का उदाहरण भी शामिल है, जिनकी चार पत्नियाँ थीं, जिनसे इस्राएल के बारह गोत्र और स्वयं मसीहा आए। यह कभी नहीं कहा गया कि याकूब ने प्रत्येक नई पत्नी के साथ व्यभिचार किया।

एक और प्रसिद्ध उदाहरण दाऊद का व्यभिचार है। भविष्यदवक्ता नातान ने यह नहीं कहा कि जब दाऊद ने बतशेबा के साथ संबंध बनाए (2 शमूएल 12:9) तो राजा की किसी स्त्री के विरुद्ध व्यभिचार हुआ, बल्कि केवल उरिय्याह, उसके पति, के विरुद्ध। याद रखें कि दाऊद पहले से ही मीकाल, अबीगैल और अहीनोअम से विवाहित थे (1 शमूएल 25:42)। दूसरे शब्दों में, व्यभिचार हमेशा पुरुष के विरुद्ध होता है, स्त्री के नहीं।

कुछ नेता दावा करते हैं कि परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों को हर बात में समान बनाते हैं, लेकिन यह पवित्रशास्त्र में वर्णित चार हजार वर्षों में देखी जाने वाली बातों को प्रतिबिंबित नहीं करता। बाइबल में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है जहाँ परमेश्वर ने किसी पुरुष को अपनी पत्नी के विरुद्ध व्यभिचार करने के लिए दोषी ठहराया हो।

पढ़ें: [यीशु आज बहुविवाह की अनुमति क्यों नहीं देते।](#)

इसका यह अर्थ नहीं है कि पुरुष व्यभिचार नहीं करता, बल्कि यह कि परमेश्वर पुरुष और स्त्री के व्यभिचार को अलग-अलग मानते हैं। बाइबल में दंड दोनों के लिए समान था ([लैव्यव्यवस्था 20:10](#); [व्यवस्थाविवरण 22:22-24](#)), लेकिन पुरुष की कुंवारापन और विवाह के बीच कोई संबंध नहीं है। यह स्त्री है, पुरुष नहीं, जो यह निर्धारित करती है कि व्यभिचार है या नहीं। बाइबल के अनुसार, पुरुष तब व्यभिचार करता है जब वह किसी ऐसी स्त्री के साथ संबंध बनाता है जो न तो कुंवारी है और न ही विधवा। उदाहरण के लिए, यदि 25 वर्ष का कुंवारा पुरुष 23 वर्ष की ऐसी युवती के साथ सोता है जिसका पहले किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध रहा है, तो वह व्यभिचार करता है — क्योंकि परमेश्वर के अनुसार वह युवती किसी अन्य पुरुष की पत्नी है ([मती 5:32](#); [रोमियों 7:3](#); [गिनती 5:12](#))।

लेवीर विवाह और वंश की रक्षा

यह सिद्धांत — कि स्त्री केवल पहले पुरुष की मृत्यु के बाद ही किसी अन्य पुरुष से जुड़ सकती है — परमेश्वर द्वारा वंश की संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए दी गई लेवीर विवाह की व्यवस्था में भी पुष्ट होता है: “यदि भाई साथ रहते हों और उनमें से एक की संतान न हो और वह मर जाए, तो मृतक की पत्नी किसी अजनबी से विवाह न करे। उसके पति का भाई उसके पास जाए, उसे पत्नी बनाए और देवर का कर्तव्य पूरा करे...” (व्यवस्थाविवरण 25:5-10; देखिए भी उत्पत्ति 38:8; रूत 1:12-13; मत्ती 22:24)। ध्यान दें कि यह व्यवस्था तब भी पूरी की जानी थी यदि देवर की पहले से कोई अन्य पत्नी हो। बोअज़ के मामले में, उसने रूत को एक नज़दीकी रिश्तेदार को भी पेशकश की, लेकिन उस व्यक्ति ने मना कर दिया, क्योंकि वह दूसरी पत्नी लेकर अपनी विरासत को बाँटना नहीं चाहता था: “जिस दिन तू नाओमी के हाथ से खेत खरीदेगा, उस दिन तू मोआबी रूत, जो मृतक की पत्नी है, को भी लेगा, ताकि मृतक के नाम को उसकी संपत्ति पर कायम रखे” (रूत 4:5)।

विवाह पर बाइबिल का दृष्टिकोण

शास्त्रों में प्रस्तुत विवाह का बाइबिल दृष्टिकोण स्पष्ट है और आधुनिक मानवीय परंपराओं से भिन्न है। परमेश्वर ने विवाह को एक आध्यात्मिक संबंध के रूप में स्थापित किया, जो एक पुरुष और कुंवारी या विधवा के बीच पूर्णता द्वारा सील होता है, और जिसके लिए समारोह, अधिकारी या बाहरी रीति-रिवाजों की आवश्यकता नहीं होती।

इसका यह अर्थ नहीं है कि बाइबिल विवाह में समारोहों को मना करती है, लेकिन यह स्पष्ट होना चाहिए कि वे न तो आवश्यक हैं और न ही यह पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार आत्माओं का संबंध हो गया है।

परमेश्वर की दृष्टि में संबंध तभी मान्य होता है जब सहमति से संबंध बनता है, जो इस दैवीय व्यवस्था को दर्शाता है कि मृत्यु तक स्त्री केवल एक पुरुष से ही जुड़ी रहे। बाइबिल में वर्णित विवाह भोजों में समारोह का अभाव यह पुष्टि करता है कि ध्यान निजी वाचा और वंश को जारी रखने के दैवीय उद्देश्य पर है, न कि मानवीय औपचारिकताओं पर।

निष्कर्ष

इन सभी बाइबिल विवरणों और सिद्धांतों के प्रकाश में यह स्पष्ट हो जाता है कि विवाह की परमेश्वर की परिभाषा उसकी अपनी योजना में निहित है, न कि मानवीय परंपराओं या कानूनी औपचारिकताओं में। सृष्टिकर्ता ने शुरुआत से ही मानक तय कर दिया: विवाह उसकी दृष्टि में तब सील होता है जब पुरुष किसी ऐसी स्त्री के साथ सहमति से संबंध बनाता है जो विवाह के लिए स्वतंत्र है — अर्थात् वह या तो कुंवारी है या विधवा। जबकि नागरिक या धार्मिक समारोह सार्वजनिक घोषणा के रूप में काम आ सकते हैं, वे यह तय करने में कोई महत्व नहीं रखते कि परमेश्वर के सामने संबंध मान्य है या नहीं। जो बात मायने रखती है वह है उसकी व्यवस्था का पालन, वैवाहिक बंधन की पवित्रता का सम्मान और उसकी आज्ञाओं के प्रति निष्ठा, जो सांस्कृतिक परिवर्तनों या मानवीय राय के बावजूद अपरिवर्तित रहती हैं।